सात्विक प्रकृति का विकास ही पुरुषार्थ

- गतांक से आगे...

तामसी बुद्धि अज्ञान अंधकार के वशीभूत होकर, अधर्म को धर्म मान लेती है। जो धर्म को अधर्म मानता है और सदैव विपरीत दिशा में प्रयत्नशील रहता है, वह है तामसी बुद्धि वाला मनुष्य। तो इस प्रकार तीन प्रकार की बुद्धि मनुष्य के अंदर स्पष्ट की गई है। कैसी प्रकृति से, कैसी बुद्धि उसकी बनती है। तीन प्रकार की धारणाओं की शक्ति बतलायी है। जो योगाभ्यास द्वारा अव्यभिचारी धारणा से अपने मन, प्राण और इंद्रियों के क्रियाकलापों को वश में रखते हैं वह सात्विक धारणामूर्त हैं। जहाँ अपनी इंद्रियों के ऊपर सम्पूर्ण अनुशासन है, वह सात्विक धारणा है। जिस वृत्ति से मनुष्य धर्म अर्थ तथा काम के फलों में लिप्त बना रहता है, वह राजसी धारणायें हैं। दुर्बुद्धि पुरुष जिस धारणा के द्वारा स्वप्न, भय, शोक, विषाद और मद को नहीं त्यागता है वह धारणा तामसी है। तो इस प्रकार तीन प्रकार की धारणा शक्ति वाले भी इस संसार में लोग हैं। सबसे श्रेष्ठ धारणा की शक्ति है जिससे अपनी इंद्रियों के ऊपर सम्पूर्ण अधिकार संभव है और योगाभ्यास द्वारा उस अधिकार को प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार फिर परमात्मा ने अर्जुन के सामने तीन प्रकार के सुखों की व्याख्या की है। हे अर्जुन, तीन प्रकार के सुख का वर्णन सुन। अर्थात् सबसे पहले त्याग और सन्यास की बात बतायी, उसके बाद ज्ञान तीन प्रकार का, कर्म तीन प्रकार का, कर्ता तीन प्रकार के, साथ ही साथ बुद्धि तीन प्रकार की, धारणा शक्ति तीन प्रकार की और उसके फलस्वरूप तीन प्रकार के सुख का वर्णन सुनने के लिए भगवान कहते हैं। जिसे रमण करने से मनुष्य प्रसन्न रहता है और जिससे दुःख का अंत होता है। जो

पुरुषार्थ माना पुरुष और अर्थ। पुरुष अर्थात् आत्मा। आत्मा की उन्नति अर्थ जितना हम सात्विक प्रकृति को विकसित करते जाते हैं, इसी का नाम पुरूषार्थ है। भगवान अर्जुन को भी ये पुरुषार्थ करने के लिए कहते और उसे प्रेरित करते हैं।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सुख आरंभ में विष के समान है अर्थात् जब मनुष्य मेहनत करता है तो मेहनत में उसको कठिनाई का अनुभव होता है आरंभ में, परंतु परिणाम में अमृत के समान है। वह आत्मस्वरूप में समाहित बुद्धि प्रसन्नता, निर्मलता, स्थिरता का सुख अनुभव करती है। यह सतोगुणी सुख है। दूसरे प्रकार का जो सुख है, राजसी सुख। जो सुख विषय और इंद्रियों के संयोग से उत्पन्न होता है। वह प्रथम तो अमृत समान अनुभव होता परंतु परिणाम में विष तुल्य होता है। जो सुख आत्मोन्नति के प्रति अंधा, प्रारंभ से लेकर अंत तक मोहग्रस्त है और जो आलस्य, निद्रा और प्रमाद से उत्पन्न होता है, वह तामसी सुख है। आलसी व्यक्ति सारा दिन अगर बिस्तर पर पड़ा रहता है, तो वह सुख का अनुभव करता है, लेकिन वह सुख तामसी सुख है। तो इस प्रकार, तीन प्रकार के सुखों का अनुभव मनुष्य करता है। फिर भगवान ने कहा - पृथ्वी पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में प्रकृति के गुणों के अनुसार ये स्वभाव द्वारा, उत्पन्न गुणों के द्वारा भेद किया जाता है। जैसे जिसका स्वभाव होता है, उस स्वभाव के अनुसार ही भेद किया जाता है। पृथ्वी पर अथवा स्वर्ग के देवताओं में ऐसा कोई प्राणी नहीं, जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीन गुणों से मुक्त हो। तीन गुण कहाँ न कहाँ किसी में किस परसेंटेज में और किसी में कौन सा और किसी में कौन सा अधिक रहता है। पुरुषार्थ का मतलब ही यह है। पुरुषार्थ माना पुरुष और अर्थ। पुरुष अर्थात् आत्मा। आत्मा की उन्नति अर्थ जितना हम सात्विक प्रकृति को विकसित करते जाते हैं, इसी का नाम पुरूषार्थ है। भगवान अर्जुन को भी ये पुरुषार्थ करने के लिए कहते और उसे प्रेरित करते हैं। तो शांतिप्रियता, आत्मसंयम, तपस्या, पवित्रता, क्षमाभाव, सरलता, सत्यनिष्ठा तथा ज्ञान और विज्ञान ये सारे स्वाभाविक गुणों द्वारा ब्राह्मण कर्म करता है। ये ब्राह्मणों के कर्म करने का आधार है।

- क्रमशः

यह जीवन है...

पैरों में से कांटा निकल जाए तो चलने में मज़ा आ जाता है,
और मन में से अहंकार निकल जाए तो... जीवन जीने में मज़ा आ जाता है।
चलने वाले पैरों में कितना फर्क है,
एक आगे है तो एक पीछे...
पर ना तो आगे वाले को अभिमान है और ना पीछे वाले को अपमान।
क्योंकि उन्हें पता होता है कि पलभर में ये बदलने वाला है...
इसी को ज़िन्दगी कहते हैं।

ख्यालों के आईने में...

पाप हमारी सोच से होता है, शरीर से नहीं, और तीर्थों का जल हमारे शरीर को साफ करता है, हमारी सोच को नहीं।
गलती नीम की नहीं कि वो कड़वा है,
खुदगर्ज़ी जीभ है कि उसे मीठा पसंद है।

सोच समझकर बोलो।
हम पहले बोल देते हैं...
फिर समझते हैं गलती हो गयी ...
फिर सोचते रहते हैं - क्यों बोला!
सोच समझकर बोलो...
तो बोल कभी गलत नहीं निकलेगा।

पणजी-गोवा। ज्ञानदीप गोवा द्वारा आज़ाद मैदान में आयोजित पाँच दिवसीय सामूहिक 'भक्ति महोत्सव' कार्यक्रम में तरुण भारत पब्लिकेशन्स की डायरेक्टर बहन साई ठाकुर बिजलानी राजयोगिनी ब्र.कु. शोभा को सम्मानित करते हुए।

अहमदनगर-महा.। 100 विश्वविक्रम करने वाले प्रथम भारतीय बनने पर वर्ल्ड बुक ऑफ रेकॉर्ड्स,लंदन की ओर से ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके को 'प्राइड ऑफ इंडिया अवॉर्ड' देकर सम्मानित करते हुए पुणे में छत्रपती शिवाजी महाराज के 13वें वंशज छत्रपती उदयनराजे भोसले।

नागपुर-जामठा(महा.)। विश्वशांति सरोवर में आयोजित 'राइज़ एंड शाइन' विषयक कार्यक्रम में तीन सौ युवाओं को सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. शिवलाल,बहरीन।

भरतपुर-राज.। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 50वें स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सुधीर बंसल,जिला परिवहन अधिकारी, अभय कुमार,जिला विकास प्रबंधक,नाबार्ड, तेजा सिंह,रिटायर्ड कर्नल, ब्र.कु. अमर सिंह, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. बबिता तथा ब्र.कु. कमलेश।